समावेश

एक पहल...

अंक 4, मई–जुलाई 2011

समुदाय आधारित पुनर्वास कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रकाशित

संपादक की कलम से...

प्रिय पाठकों,

इस अंक में हमारे द्वारा किये गये कार्यो को प्रकाशित किया जा रहा है।

विकलांग बच्चों के लिये कौशल विकास प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिससे बच्चों का मनोबल बढ़ा है।

वयस्क विकलांगों को नरेगा व अन्य व्यवसायिक कार्यो में संलग्न कर उनका आत्मविश्वास बढ़ाया गया। साथ ही उन्हें सरकारी योजनाओं से लाभान्वित किया गया और उन्हें योजनाओं की जानकारी प्रदान की गई जिससे उनकी आय में वृद्धि हो सके।

इस अंक में हेलन केलर की कहानी प्रकाशित की गई है जो विकलांगजनों का मनोबल बढ़ाकर उन्हें आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करेगी।

इस अंक के बारे में आपके बहुमूल्य विचार सादर आमंत्रित हैं।

'संपादक मंडल'

कौशल विकास प्रशिक्षण का आयोजन

कौशल विकास प्रशिक्षण में भाग लेते बच्चे

प्रशिक्षण के दौरान पार्क का भ्रमण किया

13–28 जून 2011 तक नेत्रहीन व दृष्टिबाधित बच्चों के लिये 16 दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में चित्तौड़गढ़ व निम्बाहेड़ा से 15 नेत्रहीन व दृष्टिबाधित बच्चों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण में साईटसेवर्स जयपुर से रीना जी, नितिन जी तथा गोमाबाई नेत्रालय नीमच से अर्जुन जी ने इस प्रशिक्षण का अवलोकन किया। संदर्भ शिक्षक के रूप में 'नेशनल फाउण्डेशन फॉर द ब्लाईण्ड' फरीदाबाद से विजय शर्मा तथा कट्स मानव विकास केन्द्र चित्तौड़गढ़ से रामेश्वर पचौरिया व गोवर्धन लाल पारीक ने प्रशिक्षण दिया।

प्रशिक्षण के प्रारम्भ में बच्चों का आपसी परिचय व क्रियात्मक आंकलन किया गया तथा सांवलिया सामान्य चिकित्सालय में नेत्र विशेषज्ञ गंगाधर शर्मा एवं देवेश शर्मा ने बच्चों का नेत्र प्रशिक्षण किया। बच्चों का सम्पूर्ण स्वास्थ्य परीक्षण भी कराया गया।

बच्चों से दैनिक दिनचर्या में होने वाले कार्यो को करवाया गया जैसे ब्रश करना, नहाना, कंघी करना, भोजन करना, कपड़े की तह करना आदि। स्पर्श पद्धति से उन्होंने चीजों को छूकर पहचानना सीखा जैसे अपने कपड़ों की पहचान करना, टेबल कुर्सी का प्रयोग, नोट की पहचान, मोबाईल चलाना आदि।

बच्चों को अपनी इन्द्रियों का प्रयोग करना बताया जैसे सूंघ कर फल, फूल, मिठाई की पहचान, सुनकर पशु, पक्षी, यातायात के साधन व इंसान की पहचान तथा छूकर अनाज, आकृतियां, सामान आदि की पहचान करना। कमरे के अन्दर व बाहर कैसे सही व सुरक्षित ढंग से चला जाये इसका प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में उपस्थित बच्चों को ब्रेल के माध्यम से पढ़ाया गया व उसका उपयोग बताया गया। बच्चों ने योग, कहानी, कविता और ज्ञानर्धक बातें सीखीं।

इन बच्चों को बाहर भी भ्रमण करवाया गया। चित्तौड़गढ़ दुर्ग में बच्चों ने स्पर्श कर चीजों को पहचाना व जानकारी ली। बच्चों को नेहरू गार्डन ले जाया गया यहाँ बच्चों ने खेल खेला तथा झूलों का आनंद लिया। बच्चों का वजन कराया गया और बाल कटिंग तथा स्वयं की साफ सफाई के लिये जानकारी प्रदान की। बच्चों ने हारमोनियम व ढोलक का प्रयोग कर प्रशिक्षण का आनन्द लिया तथा रेडियो पर गाने सुने एवं स्वयं भी गाने गाये।

प्रशिक्षण के समापन पर बच्चों के अभिभावकों को बुलाया गया तथा इन 16 दिनों में बच्चों को क्या सिखाया गया उसकी जानकारी प्रदान की। अभिभावकों ने इस प्रशिक्षण को सराहा और समय समय पर ऐसे प्रशिक्षण होते रहने पर जोर दिया। इस प्रशिक्षण को परियोजना अधिकारी आराध्य शंकर गौड़ के नेतृत्व में परियोजना से जुड़े सभी लोगों ने सहयोग कर सफल बनाया।

पंचायतीराज कार्यशाला

समुदाय के विकास, रोजगार व उनके कल्याण में पंचायतीराज प्रतिनिधियों की महत्वपूर्ण भूमिका देखी गयी है। इनकी भूमिका को ध्यान में रखते हुय स्वास्थ्य विभाग, पंचायतीराज विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग को संवेदनशील व जागरूक करने के लिये चित्तौड़गढ़ व निम्बाहेड़ा ब्लॉक में पंचायती राज प्रतिनिधियों का एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

विकलांगों के प्रति संवेदनशील व जागरूक बनाने के लिये संस्था द्वारा 28 मई 2011 को चित्तौड़गढ़ ब्लॉक में कट्स मानव विकास केन्द्र पर कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 6 ग्राम पंचायत के 26 प्रतिनिधियों ने भाग लिया वहीं 16 जून 2011 को निम्बाहेड़ा ब्लॉक के ढोरिया गांव में भी कार्यशाला का आयोजन हुआ जिसमें 6 ग्राम पंचायत से 50 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

पंचायतीराज प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण देते हुये

इस कार्यशाला में सरपंच, वार्डपंच, ए.एन.एम, आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ता, आशा, विकलांग मित्र एवं समुदाय मुखिया शामिल थे। कार्यशाला में सहभागियों को विकलांगों के प्रति संवेदनशील कर सरकार द्वारा विकलांगों को प्रदान की जाने वाली सरकारी सुविधाओं को समान रूप से पहुंचाने पर जोर दिया गया। सरकार विकलांगों के लिये पेंशन, बस व रेल पास, सरकारी योजनाओं एवं स्वयं सहायता समूह गठन आदि योजनाओं के माध्यम से उन्हें लाभान्वित कर विकलांगों को आगे लाने का प्रयास कर रही है। सहभागियों ने विकलांगों को समुदाय में बराबरी व समान अधिकार देने का आश्वासन दिया। इस कार्यशाला में सहभागियों को सरकारी योजनाओं, पंचायतीराज प्रतिनिधियों की भूमिका, विकलांगता व उसके प्रकार, विकलांगों के अधिकार, आंखों से जुड़ी समस्या व उपचार, नेत्रहीनों व दृष्टिबाधित लोगों को शिक्षा व पुनर्वास एवं समाज में विकलांगों की दशा पर चर्चा की गई।

प्रमुख गतिविधियाँ

बैंक में खाता खुलवाने के बाद उपस्थित स्वयं सहायता समूह के सदस्य

- माह मई, जून एवं जुलाई में 23 गांवों मे समुदाय बैठकों का आयोजन किया गया जिसमें औसतन 25 लोगों ने भाग लिया। इस बैठक में समुदाय को विकलांगजन के कल्याण व उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया। समुदाय को विकलांगों से जुड़ी योजनाओं से भी अवगत कराया गया। विकलांगजन को स्वयं सहायता समूह बनाने के लिये प्रोत्साहित किया गया जिससे वे अपने आपको आत्मनिर्भर बना सकें।
- निम्बाहेड़ा ब्लॉक के ग्राम पंचायत टाई की नवाबपुरा गांव में रहने वाली देउ जो नेत्रहीन है और कक्षा 3 में अध्यनरत हैं उसे सर्व शिक्षा अभियान के संदर्भ केन्द्र से ब्रेल किट दिलवाई।
- चित्तौड़गढ़ व निम्बाहेड़ा में 14 दृष्टिबाधित बच्चों का सरकारी विद्यालय में दाखिला करवाया गया।
- धनेतकलां की काली भील जो नेत्रहीन थी उसका हाल ही में ऑपरेशन कराया गया जिससे उसे दिखाई देने लगा। उसका दाखिला सरकारी विद्यालय में कराया गया व कक्षा चौथी में पढ़ रही है।
- 4 विकलांगों को इन्दिरा आवास योजना का लाभ दिलवाया। प्रत्येक व्यक्ति को 50000 की सहायता राशि प्रदान की गई
- परियोजना क्षेत्र में विकलांगजन के 17 स्वयं सहायता समूह बनाये गये ताकि उनमें बचत की आदत डालकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा सके। उन्हें लोन दिलाकर व किसी व्यवसाय से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाया जा सके। 17 स्वयं सहायता समूह में कुल 160 विकलांग लोगों को जोड़ा गया जिसमें 17 दृष्टिबाधित हैं।

नेत्रहीन व बधिर महिला की सफल कहानी

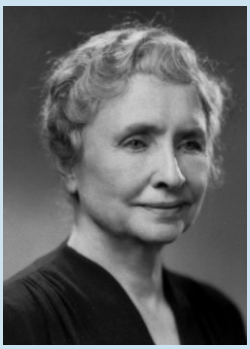
हेलन केलर

हेलन केलर का जन्म संयुक्त राज्य अमेरिका के उतर पश्चिम इलाके के छोटे से कस्बे टस्कंबिया में सन् 27 जून 1880 को हुआ था। जब वह 2 वर्ष की थी तो एक भयंकर बिमारी की चपेट में आने के कारण उसकी सुनने व देखने की शक्ति समाप्त हो गई। जिससे वो चिड़चिड़ी हो गई और अक्सर गुस्से में रहने लगी। जब हेलन कुछ बड़ी हुई तो उसके माता पिता ने मिस एन सुलिवन को उसे पढ़ाने के लिये अध्यापिका के रूप में रखा। मिस सुलिवन ने हेलन के हाथों पर लिखकर उसे महसूस कराया और उसे पढ़ना सिखाया। हेलन ने छूकर संकेतों के माध्यम से पढ़ना सीखा। उसने छू कर महसूस कर पशु–पक्षी, प्रकृति एवं दैनिक जीवन की बातों का ज्ञान लिया। मिस फूलर ने हेलन केलर को बोलना सिखाया और धीरे धीरे उसको पढ़ना लिखना आ गया। उन्होंने उसके बाद न्यूयॉर्क सिटी के एक विशेष स्कूल में पढ़ाई की और 2 साल बाद केम्ब्रिज स्कूल फॉर यंग लेडिज में दाखिला लिया और यहां रहकर कॉलेज की पढ़ाई की और टाईपराईटर का उपयोग भी सीखा। सन् 1900 में उन्होंने रेडक्लिफ कॉलेज में दाखिला लिया और अत्यंत व्यस्त रहते हुये दिन रात पढ़ाई की। एन सुलिवन की मदद से वो अपनी पढाई पूरी कर पाई और बाद में विश्वविख्यात हुई। उन्होंने दर्जन से भी अधिक पुस्तकें लिखी। अमेरिका के राष्ट्रपति जानसन ने अमेरिका का सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रेसिडेन्ट मेडल ऑफ फ्रीडम से सम्मानित किया।

नेत्रहीनों के लिये प्रेरणा का स्रोत बनी हेलन केलर विश्व प्रसिद्ध हुई। दोहरी विकलांगता के होते हुये भी दुनिया को एक नई किरण दी। वे इतनी प्रसिद्ध हुई कि अमेरिका के कई राष्ट्रपति ग्रोवर क्लीवलैंड से लेकर जॉन एफ. कैनेडी तक उनसे मिलने के इच्छुक थे। हेलन ने मूक बधिर व अन्य प्रकार की विकलांगता से ग्रस्त लोगों को समाज में सम्मानपूर्वक जीवनयापन करने का हौसला दिया। हेलन का मानना था कि थोड़ी सी मदद से दृष्टिहीन लोग न सिर्फ अपना जीवन स्वतंत्रता पूर्वक जी सकते है बल्कि जो कुछ उन्हें समाज से मिलता है उससे ज्यादा वो समाज में अपने कार्यो द्वारा योगदान कर सकते हैं। वे 1 जून 1968 को दुनिया से चल बसी। उनका जीवन हरेक इंसान के लिये एक सबक है अगर मनुष्य चाहे तो बड़ी से बड़ी बाधा पर भी विजय प्राप्त कर सकता है।

हेलन से जब पूछा गया कि अन्धे होने से बुरा क्या हो सकता है? तो उन्होंने कहा कि लक्ष्यहीन होना नेत्रहीन होने से बुरा है। यदि इन्सान के लक्ष्य तय है तो वह एक सफल जीवन जी सकता है। हेलन के पास लक्ष्य था इसलिये वह सफल हुई।

नारू व रतनी को नरेगा से जोड़ा

- चित्तौड़गढ़ ब्लॉक के पुरोहितों का सांवता की 38 वर्षिय रतनी अहीर जो 15 साल पूर्व अपनी आंखों की ज्योति खो चुकी है। उसे अब बिल्कुल दिखाई नहीं देता व उसकी आर्थिक स्थिति भी कमजोर है। मार्च माह में जब कार्यकर्त्ता द्वारा रतनी से मिला गया तो उसने जानकारी दी कि उसका जॉब कार्ड, विकलांगता प्रमाण पत्र तथा बैंक अकाउन्ट है परन्तु नरेगा में उसे कोई कार्य नहीं दिया जा रहा है।

  कार्यकर्त्ता ने उसे आश्वासन दिया और पंचायत सचिव से मिली तथा रतनी को उसकी क्षमता के आधार पर कार्य देने का आग्रह किया। सचिव का मानना था कि एक नेत्रहीन महिला क्या काम कर सकती है। बहुत समझाने पर उसे पानी पिलाने के काम पर रख लिया गया। इस तरह उसे रोजगार से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाया गया।

रतनी अहीर

- चित्तौड़गढ़ जिले के तुम्बडियां पंचायत की रेदास कॉलोनी गांव में रहने वाले 65 साल के नारूजी जो जन्म से नेत्रहीन है जब कार्यकर्त्ता से मिले तो उन्होंने बताया कि उनकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर है और उनके पास आय का कोई साधन भी नहीं है। उनके पास नरेगा का जॉब कार्ड व विकलांगता का प्रमाण पत्र है। वे कई बार काम के लिये संबंधित अधिकारी से मिले पर उन्हें यह कह कर मना कर दिया गया कि आपके लायक कोई काम नहीं है क्योंकि आप यहां काम करने में सक्षम नहीं हैं।

  मई 2011 में कार्यकर्त्ता द्वारा नारूजी का बैंक में खाता खुलवाया गया। उसके पश्चात् कार्यकर्त्ता ग्राम पंचायत के सहायक सचिव से मिली और निवेदन किया कि नारूजी को उसकी क्षमता के आधार पर नरेगा में काम उपलब्ध कराया जाये। तब नारूजी को नरेगा में मजदूरी प्रदान की गई जिससे वे कुछ पैसे कमाकर अपना गुजर बसर कर रहे हैं।

नारूजी

कौशल प्रशिक्षण के दौरान अतिथियों से मिलते हुये व प्रशिक्षण में भाग लेते बच्चे

पंचायती राज प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण के दौरान जानकारी देते संदर्भ व्यक्ति

समुदाय के साथ चर्चा करते हुये

समुदाय स्तरीय बैठक का आयोजन

नेत्रहीन द्वारा ब्रेल स्लेट का उपयोग

मीडिया

दृष्टिबाधित बच्चों को कराया दुर्ग भ्रमण

भास्कर न्यूज | चित्तौड़गढ़

स्पर्श कर जाना दुर्ग का महत्व

दृष्टिबाधित बच्चों को दी कौशल विकास की जानकारी

आगे आने का किया आह्वान

विकलांगों की सहायतार्थ प्रशिक्षण शिविर आयोजित

न्यूज सर्विस

निम्बाहेड़ा, 16 जून। समीपवर्ती ढोरिया गांव में गुरुवार को कट्स संस्थान की ओर से विकलांगों की सहायतार्थ एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। कट्स संस्थान के रामेश्वर पचोरिया ने ... सहभागियों को विकलांग जनों की स्थिति, उनके अधि... की विभिन्न योजनाओं, कानून आदि की जानकारी दी ... प्रशिक्षण में गोपाल गायरी, मोहन मेघवाल, आ... विकलांगता पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ...

विकलांग प्रशिक्षण शिविर आयोजित

चित्तौड़गढ़ | कट्स मानव विकास के... तत्वावधान में एक दिवसीय विकलांग प्र... शिविर का आयोजन डोरिया गांव में हुआ। ... रामेश्वर पचोरिया ने बताया कि प्रशिक्षण ...

कौशल विकास पर चर्चा

चित्तौड़गढ़. कट्स मानव विक... चित्तौड़गढ़ की ओर से दृष्टि बाधि... के लिए आयोजित किए जा र... शिविर के 7 वें दिन ...

नेत्रहीन बच्चों का कौशल विकास प्रशिक्षण सम्पन्न

कौशल विकास प्रशिक्षण संपन्न

न्यूज सर्विस

चित्तौड़गढ़ | कट्स इंटरनेशनल के तत्वावधान में आयोजित नेत्रहीन बच्चों का 15 दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण मंगलवार को संपन्न हुआ। कट्स मानव विकास केंद्र के परियोजना अधिकारी आराध्य शंकर गौड़ ने बताया कि साइट सेवर्स के सहयोग से चलाए जा रहे समुदाय आधारित पुनर्वास कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित प्रशिक्षण में नेत्रहीन बालकों को आत्मनिर्भर बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कट्स के रामेश्वरलाल पचोरिया एवं गोवर्धन पारीक ने बाल केंद्रित गतिविधियों की जानकारी दी। प्रशिक्षण में चित्तौड़गढ़ व निम्बाहेड़ा पंचायत समिति के 15 बालकों ने ...

विकास करने का प्रयास किया गया। कट्स के रामेश्वरलाल पचोरिया एवं गोवर्धन पारीक ने बच्चों को खेल, भ्रमण, ब्रेल के प्रयोग का उपयोग कर उनकी अभिरूचियों को बढ़ावा देने के लिये बाल केन्द्रित गतिविधियां कराई। प्रशिक्षण में चित्तौड़ व निम्बाहेड़ा के दृष्टिबाधित व अल्पदृष्टि बच्चों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

विकलांग मंच की बैठक आयोजित

मंच की कोषाध्यक्ष खुशनुमा खान ने सरकार द्वारा राजस्थान के पांच जिलों में विकलांगों के पुनर्वास प्रशिक्षण योजना की सराहना रते हुए कहा कि यह योजना चित्तौड़ जिले के विकलांगों के लिये लाभदायी होगी। बैठक में निर्णय लिया गया कि अधिकाधिक विकलांगों को सरकार की इस योजना का लाभ दिलाने के लिये सम्पर्क कर प्रशिक्षण का लाभ दिलाया जाएगा। मंच के सदस्यों की सहमति से मंच की सदस्यता के लिये एक हजार रूपये की राशि तय की ...

मुद्रक : एस. एस. प्रिन्टर

Sightsavers
North West India Area Office
C-39, Panchsheel Colony, Ajmer Road Jaipur-302006
Ph: +91.141.2812081; Fx: +91.141.2812081-27

कट्स मानव विकास केन्द्र
सेंती (रावला), चित्तौड़गढ़ 312025, फोन: (01472): 241472 फैक्स: 247715
E-mail: chd@cuts.org, Website: www.cuts-international.org